क्या विनयशीलता कायरता है?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विनम्रता सभी गुणों की खान है। विनम्रता से सभी गुण आ जाते हैं। अहंकार के साथ अवगुण और विनम्रता के साथ गुण आते हैं। रास्ता चुनना मनुष्य का कार्य है। संसार में जीवन यापन करने के अनेक मार्ग हैं। अपनी–अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुसार मनुष्य मार्ग चुनता है। विनयशीलता का मार्ग मनुष्य को ऊँचा उठा देता है। विनयशीलता व्यक्ति को अन्दर से बहुत मजबूत बना देती है। विनयशील व्यक्ति प्रशंसा का पात्र होता है। क्रिया की प्रतिक्रिया करना, नहले पर दहला मारना चतुराई है। जैसे को तैसा करना समाज में देखा जाता है। स्वरूप में रमण करना विनयशीलता है। जैसा भाव होता है वैसा भव बन जाता है। शुद्धता के लिए शुभ भाव की आवश्यकता होती है।

समकालीन दर्शन में दादा भगवान का चिंतन समाज के लिए बहुत ही उपयोगी है। उन्होंने क्रमविज्ञान और अक्रमविज्ञान का दर्शन समाज को दिया है। क्रमविज्ञान में जीव क्रमशः आरोहरण करता हुआ मुक्ति को प्राप्त करता है। अक्रमविज्ञान लिफ्ट का मार्ग है। इससे जीव एक ही बार में मुक्त हो जाता है। अक्रमविज्ञान हमारे भीतर यह भाव पैदा कर देता है कि मैं शुद्ध आत्मा हूँ। आत्मा ज्ञाता दृष्टा है। ऐसा प्रतीत होना अक्रमविज्ञान है। मुक्ति को प्राप्त करने के लिए आत्मा को स्वभाव में रमण करना होता है। संसार की समस्त क्रियाएं मन, वचन और काया से जुड़ी हुई हैं। सम्पूर्ण क्रियाएं कुदरत के कानून के अनुसार चलती हैं। परिणाम को बदला नहीं जा सकता। इसे भोगना ही पड़ता हैं। अक्रमविज्ञान शुद्धता का विज्ञान है।

विनयशीलता कायरता नहीं है। शास्त्रों में कहा गया है कि **क्षमा वीरस्य** भूषण**म्** अर्थात् क्षमा वीरों का आभूषण है। **जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा** अर्थात् जो कर्म में सूरवीर होते हैं वे धर्म में भी सूरवीर कहलाते हैं। धर्म विनम्रता है। कायरता पलायनवाद है। जो लोग वीनयशीलता को कायरता मानते हैं वे बहुत बड़ी भूल करते हैं। भगवान राम लंका पर आक्रमण करने के लिए

जब समुद्र तट पर पहुॅचे तब समुद्र से प्रार्थना किया कि वह उन्हें मार्ग प्रदान कर दें। बारम्बार प्रार्थना करने के बाद भी समुद्र मार्ग प्रदान नहीं कर रहा था।

भगवान राम ने विनम्रता और मर्यादा का परिचय दिया किन्तु समुद्र ने उनकी एक न सुनी। जब भगवान राम समुद्र को लांघने के लिए अपने तर्कश से बाण निकाला और समुद्र को सुखाने के लिए सरसंधान किया तो समुद्र उनके सामने हाथ जोड़कर उपस्थित हो गया और मार्ग देने के लिए तैयार हो गया। जब तक भगवान श्रीराम ने विनम्रता और मर्यादा दिखाई तब समुद्र तैयार नहीं हुआ। जैसे ही भगवान ने क्रोध दिखाया वैसे ही समुद्र लांघने का मार्ग प्रशस्त हो गया। इसलिए विनम्रशीलता को कायरता समझना भूल होती है। **क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो** अर्थात् विनम्रशीलता उसी को सुशोभित होती है जिसके पास शक्ति हो। कायर व्यक्ति की कोई नहीं सुनता।

विनम्रशील व्यक्ति महान होता है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर राजकुल में पैदा हुए थे। सम्पूर्ण राजसी भोग और सुख साधन के सम्पूर्ण उपक्रम उनके लिए उपस्थित थे। लेकिन उन लोगों ने उन सभी का परित्याग करके जीवन मुक्ति का मार्ग चुना। जीवन का वास्तविक मार्ग आत्म चिंतन का मार्ग है। सम्भाव से जीवन के कष्टों को सहन करना चाहिए। सज्जनता के मार्ग पर चलने के लिए अनेक विरोधों का सामना करना पड़ता है। सभी विरोधियों को उन्होंने क्षमा कर दिया। तपस्या के द्वारा उन्होंने कर्म बंधन को काट डाला। उनके द्वारा निर्भीकतापूर्वक जीवन का मार्ग प्रशस्त किया गया। उनका सिद्धान्त था **आत्मदीपो भव** अर्थात् स्वयं दीपक बनकर संसार को मार्ग दिखलावो। जो दूसरों को अच्छा मार्ग दिखलाता है उसका मार्ग स्वयं निष्कंटक हो जाता है। मनुष्य में आत्मिक शक्ति होनी चाहिए। कायर व्यक्ति ऐसे मार्ग को नहीं चुन सकते। सिंह और सपूत अपना मार्ग स्वयं चुन लेते हैं। मार्ग में जो बाधाएं आती हैं वे बाधाएं अपने आप समाप्त हो जाती है। कायर व्यक्ति दूसरों के दिखाए हुए मार्ग पर चलता है। वह मार्ग नहीं बना पाता। घिसी–पिटी परम्पराओं में विश्वास करता है और जीवन के यथार्थ को नहीं समझ पाता।

हमारे देश के वीर पुरुषों ने विनम्रता के द्वारा भारत को विश्व गुरु बना दिया। स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में जाकर जब अपना व्याख्यान दिया तो लोग उनकी विनम्रशीलता और

व्याख्यान की प्रौढ़ता से हतप्रभ रह गये। व्यक्ति का मूल्यांकन उसके वेशभूषा या उसके खान–पान से नहीं होता। व्यक्ति का मूल्यांकन होता है उसके वैचारिक प्रौढ़ता के कारण। इसी प्रकार भारत में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया और अपनी विनम्रता और नैतिकता के कारण आज तक अमर हैं। जो अहंकारी होता है, जिसमें विनम्रता नहीं होती उसकी समाज में इज्जत नहीं होती। रावण, कंस जैसे आततताइयों को कोई याद नहीं करता किन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण को सभी याद करके उनकी पूजा करते हैं। इसके पीछे मुख्य कारण उनकी विनम्रता है। अहंकार पतन का कारण होता है और विनम्रता उत्थान का। दोनों रास्ते मनुष्य के सामने हैं। किस मार्ग पर चलना है इसे चुनने में मनुष्य स्वतंत्र है। यदि वह विनम्रता का वरण करता है तो समाज में मान–सम्मान प्राप्त कर जीवन मुक्ति के मार्ग पर चलता है।